सेवा

नरोत्तम सहाय

नरोत्तम सहाय सेवा कहानी के मुख्य पात्र हैं। नरोत्तम सहाय एक रिटायर्ड अधिकारी हैं। जो अपनी पत्नी के साथ अकेले रहते हैं। उनके तीन बच्चें हैं, एक बेटा व दो बेटियाँ। उनके तीनों बच्चों की शादी हो चुकी है। वे अपने परिवार का ध्यान रखते हैं। उनका बेटा विस्मय अपनी पत्नी व बच्चों के साथ दिल्ली में रहता है। उनकी पत्नी का स्वास्थ्य कुछ दिनों से खराब चल रहा है। एक दिन उनकी पत्नी बाथरुम में गिरकर बेहोश हो जाती है और उन्हें ब्रेन हैमरेज हो जाता है। वे अपनी पत्नी को अस्पताल में भर्ती करा देते हैं। वे तुरंत इस घटना की खबर अपने बच्चों को दे देते हैं। माँ की बिमारी की खबर सुनते ही उनकी दोनों बेटियाँ आ जाती हैं परंतु दो दिनों के बाद ही वापस चली जाती हैं। बेटा चार दिन बाद आता है और कुछ घंटे रुककर वापिस लौट जाता है। इस कारण नरोत्तम जी निराश हो जाते हैं लेकिन किसी से कुछ भी नहीं कहते। उन्हें पता चल जाता है कि अपनी पत्नी की देखभाल उन्हें स्वंय ही करनी है। उन्हें इस बात का दुख होता है कि उनकी अपनी संतान के पास उनकी सेवा करने का समय नहीं है। वे चिन्तित है कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी की देखभाल कौन करेगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नरोत्तम सहाय एक संवेदनशील एवं स्वाभिमानी व्यक्ति हैं।

विस्मय

विस्मय नरोत्तम सहाय का बेटा है। विस्मय का विवाह हो चुका है। वह अपनी पत्नी व बच्चों के साथ दिल्ली में रहता है। उसके दो बेटे हैं। विस्मय एक कंपनी में काम करता है। वह जब-तब विदेशों की यात्रा करता रहता है। वह हमेशा अपने काम में व्यस्त रहता है। जब उसे अपनी माँ की बीमारी का पता चलता है तब भी वह समय पर आ नहीं पाता। वह पाँच दिनों के बाद अपनी माँ से मिलने आता है। जब उसके पिता उसकी माँ के बारे में विस्तार से बताते हैं तो वह उनको संक्षेप में बताने के लिए कहता है। उसके पास समय की कमी है। वह इस मशीनी युग में दौड़ रहा है और अधिक से अधिक पैसा कमाना चाहता है। भावनाओं के लिए उसके जीवन में कोई मूल्य नहीं है, वह यह भूल जाता है कि उसकी इस तरक्की के पीछे उसके माता-पिता का योगदान रहा

एक कहानी यह भी

मन्नू भंडारी

एक कहानी यह भी इस पाठ में लेखिका ने अपने जीवन की उन घटनाओं का वर्णन किया है।जिसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

आरंभ

लेखिका का जन्म मध्यप्रदेश के भानपुर गाँव में हुआ था। लेखिका के पाँच भाई-बहन थे जिसमें लेखिका सबसे छोटी थी। लेखिका का पूरा परिवार इन्दौर में रहता था। उस समय इनके पिताजी का बहुत सम्मान व प्रतिष्ठा थी। यह दो मंजिला मकान में रहते थे। इनके पिताजी ऊपरी मंजिल पर रहते थे। उनका अधिकतर समय किताबें

पढ़ने व समाज सुधार के कार्य करने में बितता था। लेखिका की माँ पढ़ी-लिखी नहीं थी। वह सुबह से शाम तक अपने परिवार की जिम्मेदारियों को पूरा करती रहती थी।

मध्य

एक बार लेखिका के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया। इनके पिता को बहुत बड़ा आर्थिक झटका लगा जिसकी वजह से वो अपने परिवारसहित इंदोर से अजमेंर आ गये। वहाँ पर उन्होंने अपने अधूरे काम को पूरा किया। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने की डिक्शनरी। आर्थिक झटका लगने से वे मानसिक रुप से इतने परेशान थे कि वह अब किसी पर भी आसानी से विश्वास नहीं कर पाते थे।

पिताजी को गोरा रंग पसंद था और लेखिका बचपन से ही काली थी। उनकी बड़ी बहन सुशीला गोरी व सुंदर थी। पिताजी हमेशा लेखिका की तुलना सुशीला से करते थे। लेखिका को अपने पिता से वह सम्मान नहीं मिला जो सम्मान उसे मिलना चाहिए था। इसलिए उनके अन्दर हीन भावना आ गयी। जिसका परिणाम यह हुआ कि अभी कोई भी उनकी तारीफ करता है तो उन्हें विश्वास ही नहीं होता। लेखिका की माँ बहुत मेहनती थी। वह पूरी ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करती थी परन्तु वह फिर भी लेखिका का आदर्श नहीं बन पायी।

लेखिका का ज्यादातर बचपन अपनी बहन सुशीला के साथ बिता। ये लोग एक मोहल्लें में रहते थे। मोहल्लें की छतें आपस में मिली होने के कारण एक जगह से दूसरी जगह आसानी से आ-जा सकते थे। लेखिका की दर्जनों कहानियाँ इसी मोहल्लें के किसी न किसी पात्र की हैं। लेखिका के घर आए दिन नेता लोग आते रहते थे। राजनीति बहसें होती रहती थी। जिसका लेखिका के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इनकी एक अध्यापिका थी शीला अग्रवाल। वह इन्हें पढ़ने के लिए अच्छी-अच्छी पुस्तकें देती थी। जिससे लेखिका की साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न रहती थी। उनकी बातों का लेखिका पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यह 46-47 के दिन थे। सभी देश के लिए कुछ न कुछ कर रहे थे। हड़तालें, जुलूस, प्रभात फेरियाँ निकाली जा रहीं थी। मन्नू भी देश की आजादी में भाग लेने लगी। प्रिंसिपल को यह सब पसंद नहीं था, उसने इसकी शिकायत मन्नू के पिता से कर दी। पिताजी क्रोध में आकर स्कूल गये। वहाँ जाने पर जब उन्हें सच्चाई का पता चला तो उन्हें लेखिका पर बहुत गर्व हुआ, उन्होंने कहा कि यह समय तो देश को आजादी दिलाने का है इसपर कोई कैसे रोक लगा सकता है।

एक घटना के बारे में बताते हुए मन्नू जी कहती हैं कि विधार्थियों का एक बड़ा समूह जो जगह-जगह जाकर हड़तालें करवा रहा था उसमें मन्नू भंडारी भी थी। उस समय मन्नू ने एक जोरदार भाषण दिया। पिताजी के एक मित्र ने मन्नू की बहुत तारीफ की।

अन्त

सन् 1947 की बात है छात्रों को भड़काने व आन्दोंलन में भाग लेने के कारण कालेज़ के प्रिंसिपल ने शीला अग्रवाल सहित दो-तीन छात्राओं को कालेज़ से निकाल दिया जिसमें मन्नू भंड़ारी भी थी। बाद में छात्रों ने इतना हंगामा मचाया कि कालिज वालों को उन्हें वापस लेना पड़ा। यह मन्नू भंड़ारी के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी और उससे भी बड़ी उपलब्धि थी देश की आजादी।

विशेषता

मन्नू भंडारी की कहानियाँ हो या उपन्यास उनकी भाषा सरल व पाठकों को आकर्षित करती है। उनकी रचनाओं में स्त्री मन से जुड़ी भावनाएँ देखी जा सकती हैं। इस पाठ में मन्नू भंडारी जी ने उन घटनाओं के बारे में लिखा है

जिसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। लेखिका ने यहाँ बड़ी खूबसूरती से एक साधारण लड़की के असाधारण बनने के पड़ावों को प्रकट किया है। इस पाठ में उनका उत्साह

मंगर एक हलवाहा

रामवृक्ष बेनीपुरी

मंगर

इस पाठ में लेखक ने मंगर के स्वाभिमानी व कर्मठ के व्यक्तित्व का रेखांकन किया है। मंगर एक मेहनती व स्वाभिमानी व्यक्ति है। उसकी पत्नी का नाम भकोलिया है। मंगर का रंग काला है। मंगर का यह काला शरीर भी देखने में बहुत सुन्दर लगता था। मंगर लेखक के घर में काम करता था। वह कभी भी किसी की गलत बात को बर्दाश्त नहीं करता था। उसे बच्चों से घृणा थी परन्तु वह लेखक से बहुत प्रेम करता था। इसका कारण यह था कि लेखक के माता-पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गयी थी। मंगर बहुत ईमानदार था। वह कभी भी अपने काम से पीछे नहीं हटता था। लोग मंगर पर अपना काम छोड़कर निश्चिंत हो जाते थे। जहाँ गाँव-भर में हलवाहे को एक रोटी मिलती, मंगर को डेढ़ रोटी मिलती थी। एक रोटी वह खुद खाता था, बची हुई आधी रोटी के दो टुकड़े करके वह अपने बैलों को खिलाता था। मंगर के लिए उसके बैल साक्षात् महादेव के समान थे। मंगर स्वभाव का बहुत रुखा था लेकिन वह काम से कभी भी जी नहीं चुराता था। अब उसका शरीर कमजोर हो चुका है। उसने कभी भी पैसों को संभाल कर नहीं रखा। बुढ़ापे के कारण उसका शरीर हल चलाने के योग्य नहीं रहा। अब उसकी पत्नी भकोलिया की वजह से ही घर का खर्च चल रहा था। अधरंग ने उसे शरीर से तो क्षीण कर दिया था किन्तु उसका मनोबल तब भी पूरी तरह खंडित नहीं हुआ था।

भकोलिया

मंगर की पत्नी का नाम भकोलिया है। मंगर व उसकी आदर्श जोड़ी है। वह जल्दी से किसी को मुँह नहीं लगाती थी वह किसी की गलत बात को बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं करती थी। लेकिन वह मन से कभी भी किसी का बुरा नहीं सोचती थी। मंगर अब बूढ़ा हो चुका था। वह अब कोई भी काम नहीं कर पाता था। वृद्धावस्था उसके लिए अभिशाप बन गयी थी। अपनी पत्नी भकोलिया के सहयोग से ही वह दिन काट रहा था। भकोलिया एक पतिव्रता नारी थी।

I SEM BCOM

Uma Chaudhary